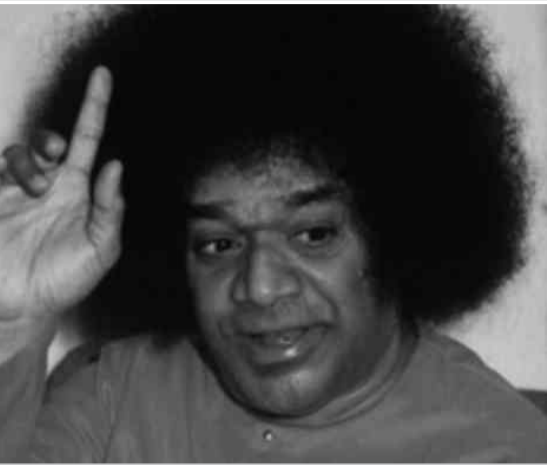


मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 25-03-2016 ● अंक-474 ● तारीख - 26 मार्च 2016, चैत्र कृष्ण - 3 ● शनिवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रुपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसाई - अनमोल वचन



उन्नति के लिए व्यक्ति एवं राष्ट्र को अवश्य प्रेम पैदा करना चाहिए। प्रेम के कारण ही हिन्दुस्तान महान बना था। यह (प्रेम) शताब्दियों तक सारे देश में छाया हुआ था।
—सत्य साई बाबा

हिम्मत न हारें

संसार के महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन ने एक बालक के पत्र के उत्तर में महान बनने का मंत्र बताते हुए लिखा —“हिम्मत न हारो। बचपन में मुझे बुद्ध कहा जाता था। लड़के मेरी पीठ पर काठ का उल्लू लिख दिया करते थे। प्रश्नों का सही उत्तर न दे सकने के कारण स्कूल में प्रायः रोज ही मुझे सजा मिलती थी। अध्यापक कहा करते थे कि मैं सात जन्म में भी गणित में पास न हो सकूंगा। इतने पर भी मैंने हिम्मत न हारी। लगातार असफलताओं का मुकाबला करते हुए मैं विद्याध्ययन में लगा रहा और उसी का फल है, जैसा कि तुम मुझे देखते हो। मैंने हिम्मत नहीं हारी और अपना रास्ता बनाया। तुम भी यदि महान बनना चाहते हो तो हिम्मत न हारो।

समर्पण की भक्ति

सतत् समर्पण ही भक्ति है। आत्मा का परमात्मा के प्रति, व्यक्ति का समाज के प्रति, शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण में भक्ति की यथार्थता और सार्थकता दर्शाता है। निष्काम और निःस्वार्थ भक्ति ही फैलती है। भक्त न उलझता है, न चिंतित होता है, वह सहज रूप में अनेक ओर अनंत को भी अपना बना लेता है। और वह कपड़ा बुनते हुए कबीर को, कपड़ा सीलते हुए नामदेव को जूते गाँवते हुए रैदास को, हजामत बनाते हुए सैना नाई को भी मिल जाता है। उस एक को प्राप्त करने वाला व्यक्ति न मोची है, न जुलाहा, वह न राजा है न रंक, वह तो सहजता, सच्चाई, प्रेम, विश्वास को अपनाने वाला सच्चा भक्त होता है। भक्त के लिए तो जीवन का हर कर्म पूजा होती है। सृष्टि का हर प्राणी भगवान् होता है। धरती का कण-कण मंदिर होता है। मंदिर में भगवान की पूजा करते हुए जितने शुद्ध भाव अनिवार्य होते हैं, उतने ही शुद्ध भाव जीवन में हर कर्म करते हुए रहें, यही भक्ति की साधना है।

सद्विचार

“होटों पर मुस्कान, हर मुश्किल को आसान कर देती है”
*आत्मोन्नति के लिए यदि अधिक से अधिक समय लगायें तो दूसरों की आलोचना करने का समय नहीं मिलेगा।”
*जीवन एक नाटक है, यदि हम इसके कथानक को समझ ले तो सदैव प्रसन्न रह सकते हैं।
*आयु बढ़ने से या दुर्घटना से सुन्दरता नष्ट हो सकती है पर आत्मिक सुन्दरता कभी नष्ट नहीं होती है।
*आज समाज, राष्ट्र व विश्व की सबसे जटिल समस्याओं का एकमात्र हल है चरित्र निर्माण, चरित्र बिगाड़ जाने पर कोई प्रतिष्ठा बाकी नहीं रहती।

प्रधानमंत्री बोले- आरक्षण दलितों का अधिकार, इसे कोई छीन नहीं सकता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में डॉ. बीआर अंबेडकर नेशनल मेमोरियल का शिलान्यास किया। इस मौके पर पीएम ने लोगों को संबोधित करते हुए खुद को बाबा साहब का भक्त बताया। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें अंबेडकर मेमोरियल के लिए साठ साल इंतजार करना पड़ा। हो सकता है कि ये मेरे ही भाग्य में लिखा होगा। उन्होंने कहा कि वाजपेयी जी ने इस मेमोरियल के लिए पहल की। उन्होंने कहा, “मैं 14 अप्रैल 2018 को इस स्मारक का उद्घाटन करने आऊंगा।”



घर-घर बिजली पहुंचाना बाबा साहब की सोच थी। और उनकी सरकार इस पर काम कर रही है। पीएम ने अपने संबोधन में कहा कि “मैं बाबा साहब का भक्त हूँ और मुझे ये कहने में गर्व महसूस होता है” मेरी सरकार अंबेडकर की इच्छाओं को पूरी करने की राह पर अग्रसर है। मेरी तमाम योजनाओं में बाबा साहब की सोच दिखती है और उसी के ऊपर हमारी सरकार काम कर रही है।

बच्चों ने खेले तिलक होली

नारायण सेवा संस्थान के आवासीय विद्यालय के निराश्रित, मूक बधिर, विमादित व प्रज्ञा चक्षु बालकों ने परस्पर एक-दूसरे के ललाट पर गुलाल का तिलक लगाकर होली पर्व मनाया। इस अवसर पर संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव ने बच्चों को अपनी शुभकामनाएँ दीं। संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल ने सभी बच्चों का मुंह मीठा कराया व उन्हें उपहार प्रदान किए।



जीवन का आधार-शुद्ध आहार

बेहतर आहार का सेवन करते ही उसका लाभ मिलना शुरू हो जाता है। हाँ, यह अलग बात है कि कुछ लाभ तुरंत नजर आने लगता है और कुछ लाभ मिलने में सालों लग जाते हैं, अगर आप चिड़चिड़े हैं और हमेशा तनावग्रस्त रहते हैं, तो इसका मतलब है कि आपमें विटामिन-बी 6 की कमी है। इसके सेवन से मस्तिष्क में डोपामाइन का स्त्राव होता है, जिससे लोग खुश एवं शान्त रहते हैं। जैसे तो यह विटामिन कई सब्जियों में पाया जाता है, लेकिन यह मुख्य रूप से आलू और केला में पाया जाता है। इसके लिए प्रति दिन एक या दो मिली ग्राम बी-6 पर्याप्त होता है। बड़ी बात यह है कि यह मात्रा एक सामान्य आकार के आलू से प्राप्त हो जाता है।

अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन के अनुसार पोटेसियम, ब्लड-प्रेसर के रोगियों के लिए ठीक होता है, लेकिन उम्र के आधार पर कुछ लोगों के लिए हानिकारक भी हो सकता है। परंतु सही तरीके से सेवन करने से यह काफी असरदार होता है। शरीर पर इसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं होता है। यह भी मुख्य रूप से आलू और केले में पाया जाता है। एक शोध के अनुसार पता चला है कि उच्च रक्तचाप के मरीजों को हर दिन 3,754 मिलीग्राम पोटेसियम का सेवन करना चाहिए, अगर इस उपाय को अपनाया जाये, तो एक सप्ताह के अंदर आपका रक्तचाप सामान्य स्तर पर आ जाता है। परंतु ऐसा करने से पहले अपने डॉक्टर से सलाह जरूर कर लें। ऑस्ट्रेलिया में हुए एक रिसर्च के अनुसार फोलेट का सेवन करने से 35 दिनों के अंदर याददाश्त तेज हो जाती है, इसके लिए एक कप पालक हर रोज सेवन करना पर्याप्त है। फोलेट सप्लिमेंट (फोलिक एसिड) का प्रयोग महिलाओं के गर्भावस्था के दौरान भी किया जाता है। इससे गर्भ में पलने वाले शिशु में किसी प्रकार की विकृति की आशंका नहीं रहती। लगभग हर प्रकार के पौधों में ल्यूटिन पाया जाता है, जिसे कैरोटिनोंयड भी कहते हैं, यह आँखों के रेटिना और लेंस की रक्षा करता है और उन्हें मजबूत बनाता है। प्रतिदिन 12 मिलीग्राम ल्यूटिन का सेवन लाभकारी होता है। यह आधा कप पालक से प्राप्त हो जाता है। फलतः पालक का सेवन सबके लिए आवश्यक है।



यात्रा में बहुत सहायक है - रुद्राक्ष



रुद्राक्ष एक खास तरह के पेड़ का बीज है। ये पेड़ आमतौर पर पहाड़ी इलाकों में एक खास ऊँचाई पर, खासकर हिमालय और पश्चिमी घाट सहित कुछ और जगहों पर भी पाए जाते हैं। आज देश में बहुत कम रुद्राक्ष के पेड़ बचे हैं। आज ज्यादातर रुद्राक्ष नेपाल, बर्मा, थाईलैंड या इंडोनेशिया से लाए जाते हैं। रुद्राक्ष की खासियत यह है कि इसमें एक अनोखे तरह का स्पंदन होता है। जो आपके लिए आप की ऊर्जा का एक सुरक्षा कवच बना देता है, जिससे बाहरी ऊर्जाएं आपको परेशान नहीं कर पाती। इसीलिए रुद्राक्ष ऐसे लोगों के लिए बेहद अच्छा है जिन्हें लगातार यात्रा में होने की वजह से अलग-अलग जगहों पर रहना पड़ता है। आपने गौर किया होगा कि जब आप कहीं बाहर जाते हैं, तो कुछ जगहों पर तो आपको फौरन नींद आ जाती है, लेकिन कुछ जगहों पर बेहद थके होने के बावजूद आप सो नहीं पाते। इसकी वजह यह है कि अगर आपके आसपास का माहौल आपकी ऊर्जा के अनुकूल नहीं हुआ तो

आपका उस जगह ठहरना मुश्किल हो जाएगा। चूंकि साधु - संन्यासी लगातार अपनी जगह बदलते रहते हैं, इसलिए बदली हुई जगह और स्थितियों में उनको तकलीफ हो सकती है। उनका मानना था कि एक ही स्थान पर कभी दोबारा नहीं ठहरना चाहिए। इसीलिए वे हमेशा रुद्राक्ष पहने रहते थे। आज के दौर में भी लोग अपने काम के सिलसिले में यात्रा करते और कई अलग-अलग जगहों पर खाते और सोते हैं। जब कोई इंसान लगातार यात्रा में रहता है या अपनी जगह बदलता रहता है, तो उसके लिए रुद्राक्ष बहत सहायक होता है।

क्या है - वेद ?

वेद शब्द का अर्थ ज्ञात है। मानव-सभ्यता के आरम्भ में जो दिव्य ज्ञान प्रकट किया गया था उसे 'वेद' कहते हैं। यथार्थ वैदिक ज्ञान 'वैदिक सनातन हिन्दू धर्म' का आधार चार पुस्तकों के रूप में उपलब्ध है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चार वेद हैं। वेद शब्द की उत्पत्ति 'विद्' धातु से हुई है। 'विद्' धातु के पाँच अर्थ हैं। सभी अर्थों के आधार पर संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि 'जिस ज्ञान को सभी लोग, अपने गणों के आधार पर जान सकते हैं, प्राप्त कर सकते हैं, विचार कर सकते हैं, जी सकते हैं और व्यवस्थित हो सकते हैं, उसको वेद कहते हैं।
ऋग्वेद में कुल मन्त्र संख्या : 10,522
यजुर्वेद में कुल मन्त्र संख्या : 1,975
सामवेद में कुल मन्त्र संख्या : 1,875
अथर्ववेद में कुल मन्त्र संख्या : 5,977
चारों वेद की कुल मन्त्र संख्या : 20,349
वेद आधुनिक विश्व के वैज्ञानिक ज्ञान के प्रमुख स्रोत हैं। सौभाग्य की बात यह है कि हिन्दुओं ने 'वेद' को पैतृक सम्पत्ति मानकर, सर्व मानव हित हेतु, एक धरोहर के रूप में सभी मनुष्यों के लिए आज तक सुरक्षित रखा है।— हिंदु शतकम् से साभार

बुराई-रहित होना

साधक महानुभाव ! अपनी की भूलसे अपनी बरबादी होती है, यह सर्वमान्य सत्य है। सिद्धान्तरूप से कोई भी 'गैर' नहीं है, 'और' नहीं है। किसी-न-किसी नाते सभी अपने हैं और सभी में अपने प्रेरणास्पद हैं। इस सत्य को स्वीकार करना प्रत्येक साधक के लिये अनिवार्य है। जहाँ कहीं जो कुछ बुराई दिखायी देती है, उसका कारण केवल अपनी ही भूल है। भूल का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। अपने सत्य को अपने द्वारा न मानना ही अपनी भूल है। यदि जीवन में भूल न होती तो हृदय में स्वभाव से सतत् प्रीति की गंगा लहराती और जीवन आनन्द-विभोर हो जाता, यह वैधानिक तथ्य है। प्रीति किसी व्यक्ति विशेष के प्रति नहीं होती, अपितु सभी में जो सभी के अपने हैं, उन्हीं में प्रीति होती है। वे ही प्रीति के अधिकारी हैं। बुराई रहित होना सत्संग से साध्य है और भला हो जाना दैवी विधान है। भलाई सीखी नहीं जाती, सिखायी नहीं जाती। बुराईरहित होने से भलाई स्वतः अभिव्यक्त होती है। बुराईरहित होने से भलाई व्यापक होती है। शान्ति-सम्पादन से अहं शुद्ध होता है और फिर स्वतः साधक में उसकी बनावट के अनुसार साधना फलने-फूलने लगती है। इस दृष्टि से समर्पण पूर्वक शान्त रहना बहुत ही आवश्यक है।
—स्वामी शरणानंद

जरा पसीना बहाएं

नियमित व्यायाम से मस्तिष्क को ज्यादा ऑक्सीजन मिलती है। साथ ही व्यायाम के दौरान कुछ ऐसे रसायन स्त्रावित होते हैं, जो दिमागी कोशिकाओं को नष्ट होने से बचाते हैं। जाहिर हैं, शारीरिक व्यायाम हमारी यादाश्त और सीखने की क्षमता बढ़ाने में कारगर भूमिका निभाता है। वैक्यूव यूनिवर्सिटी द्वारा 86 बुजुर्ग महिलाओं पर किया गया शोध तो यह दावा भी करता है कि उम्रदराज होने पर डिमेंशिया और पार्किंसंस जैसी समस्याओं से राहत पाने में भी शारीरिक श्रम मददगार हो सकता है।



मानव मन के बोल

ईमानदारी रूपी हीरा



गतांक से आगे.....
बोरात अर्थात् पागलपन। किसी गरीब को देखकर हंसिये मत, उसकी मदद कीजिये। हो सके उतनी कीजिये। एक पैसा, दौ पैसा दे दीजिये। एक कपड़ा दे दीजिये। कुछ तो दे दीजिये।

स्वामी रामदास स्वामी जी - भिक्षाम देहि के लिये जाया करते थे। एक डोकरी मां कहा करती थी, कुछ नहीं बाबू, आगे चलो, आगे चलो। चौथे दिन कहा मां आप ये मिट्टी डाल दे मेरे कमण्डल में। बोले मिट्टी का क्या करेगा, मिट्टी खायेगा क्या, बाबा - तुम्हारी ना देने की आदत है। क्या रोज, ना है ना है। गर्दन को घुमाते रहते हो। हमारे पाली में एक साथी थे उनकी गर्दन भी ऐसे ही घूमती रहती थी। एक दिन मैंने उनसे कहा साहब मुझे एडवॉन्स चाहिए। कल आप मुझे एप्लीकेशन दे देना, मैं आपको दे दूंगा। आपका जनरल एचीवमेंट फण्ड है उससे उधार ले सकते हो। दूसरे दिन एप्लीकेशन लेकर के गया। वापिस उनकी गर्दन दांये-बांये हो रही थी। कभी दांये कभी बांये। मैंने सोचा ये तो गजब हो गया, कल तो हां भर ली, अभी मना कर रहे हैं। तोड़ निकाला, दस्तखत करके मैंने तो एप्लीकेशन दे दी। मैंने कहा मैं तो साहब डर गया था। बोले क्यों डर गये थे? मैंने कहा मेरा तो थोड़ा बी.पी. हाई हो गया था, बोले क्यों?मैंने कहा आप गर्दन ऐसे कर रहे थे ना, तो मैंने सोचा आप मना कर रहे हो। आप मेरे को जी.पी.एफ. बनाकर नहीं दोगे। आप तो मालिक हो, यदि आप नहीं दोगे तो मैं कहां से ले पाऊंगा? मैं जबरदस्ती तो नहीं ले सकता। उन्होंने कहा कैलाश जी मेरी आदत पड़ गई। गर्दन दांये-बांये करने की। सर को ऊपर-नीचे करने में एक्सपर्ट कर दो ना। हां भरो! क्यों मना करते हो। भगवान भी मना करेगा, तो क्या करोगे? आप को ऑक्सीजन की कमी पड़ गई। आप कहोगे कि भगवान थोड़ी हवा भेज, नहीं हवा तो नहीं भेजता, तुम्हें बिना हवा के रखूंगा। तो वो मर जायेगा।

क्रमशः अगले अंक में ...

सम्पादकीय

माना कि हमारे पास बॉटने के लिए अपार धन नहीं परंतु एक अपाहिज की सेवा के लिए हाथ तो हैं। परवाह नहीं यदि हमारे पास भूखों को देने के लिए अन्न-भंडार नहीं पर दो मीठे बोल तो हम दुःखीजनों को दे ही सकते हैं। परवाह नहीं जो हम सर्वथा साधनहीन हों, परंतु कराहती मानवता के दग्ध हृदय को अपने आंसू से, अपनी करुणा से नहला तो सकते हैं, उसके कलेजे को सहलाकर उसमें खटकता कांटा तो निकाल सकते हैं। थके हारे, जीवन की बाज़ी खो चुके, लड़खड़ाते इन्सान के टूटते विश्वास का सहारा तो बन सकते हैं। जिसकी आँखों का, जिसके दिल की कोठरी का दीया निराशा की आधियों में बुझ चुका है— उसके लिए और कुछ नहीं तो अंधेरे की लाठी तो बन ही सकते हैं। ऐसा कोई आदमी नहीं जिसके पास देने के लिए कुछ न हो। ऐसा समय नहीं, जब हम कुछ न दे सकते हों। अपने लिए सभी रोते हैं, इसलिए संसार में सर्वत्र दुःख है, छटपटाहट है, पराजय और पीड़ा है। कभी दूसरों के लिए हम रो कर देखें, एक ही बार, आजमाइश के तौर पर। हमें भी वही आनंद, वही स्वाद मिलेगा कि फिर अपने रोने का नाम भी न लेंगे। इसलिए हम अपने बच्चों के लिए जियें, अपनी पत्नी के लिए जियें, अपने माता-पिता, बंधु-बंधवों, अपने देश के लिए, सारी मानवता के लिए जियें। जिस सीमा तक हम दूसरों के लिए जियेंगे, उसी सीमा तक आनंद के निकट होते जायेंगे। राम ने पिता के वचन के लिए दे दिया, भरत ने उसी राज्य में रहते हुए राज छोड़ दिया; कृष्ण ने सब कुछ पाकर भी सबकुछ छोड़ दिया; बुद्ध ने दुःखी मानवता के सुख का अनुसंधान करने के लिए सांसारिक वैभव का त्याग कर दिया; दूसरे जियें, इसीलिये ईसा ने अपना जीवन दिया; राष्ट्रीय एकता के लिए गांधीजी ने गोलियों की बौछार सीने पर जेली; देश सेवा का दीवाना जवाहरलाल महलों का आराम छोड़ आजन्म "दरिद्रनारायण" के साथ गली-कूचों में डोलता रहा और शांति के उपासक शास्त्री ने धधकती युद्ध की आग को अपनी आहुति से बुझाया। जो अपने को दे देता है, वह सबकुछ पा जाता है। वह साधनहीन होकर भी पूर्ण हो जाता है। यह आत्मदान जड़ में प्राण की सृष्टि करता है। यह समर्पण मरण की सेर पर अमृत हो जाता है। इसलिए हम देते चलें, लुटाते चलें। घूँघट उठाकर अपने हृदय में छिपे परम प्रियतम को निहारें। देखें, बस एक बार देखें, आनंद मिलेगा—मिलकर रहेगा।

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित निःशुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

| क्रं.स. | रोगी का नाम | पिता/पति का नाम | उम्र | लिंग | शहर | राज्य |
|---------|---------------|-----------------|------|--------|-----------|--------------|
| 1. | इन्तेखबा | इस्लाम मिया | 17 | पुरुष | समस्तीपुर | बिहार |
| 2. | कुंदन कुमार | रामचन्द्र | 18 | पुरुष | छपरा | बिहार |
| 3. | रविना हरिजन | ओमप्रकाश | 19 | स्त्री | जयपुर | राजस्थान |
| 4. | अंकुल चमार | छोटेला | 19 | पुरुष | हरिद्वार | उत्तराखण्ड |
| 5. | अमित कुमार | मंदुन राय | 20 | पुरुष | बेगुसराय | बिहार |
| 6. | राधेश्याम | करी | 21 | पुरुष | मधुबानी | बिहार |
| 7. | दीपक कुमार | बीरसिंह | 22 | पुरुष | बागपत | उत्तरप्रदेश |
| 8. | विनीता कुमारी | प्रकाश महतो | 23 | स्त्री | शेखपुरा | बिहार |
| 9. | मुकेश कुमार | शिवपुजन | 23 | पुरुष | छपरा | बिहार |
| 10. | कुलदीप | बासीर | 24 | पुरुष | तरणतारण | पंजाब |
| 11. | सतीश | सुभाष | 25 | पुरुष | सिरमौर | हिमाचलप्रदेश |
| 12. | जीतू चौधरी | लक्ष्मण | 28 | पुरुष | पटना | बिहार |
| 13. | शान्ती लाल | पुर्तिलाल | 28 | पुरुष | सीतापुर | उत्तरप्रदेश |
| 14. | सुशील | बिधी चन्द | 29 | पुरुष | हमीरपुर | हि. प्रदेश |

निःशुल्क

मुट्टी में तकदीर हमारी

गतांक से आगे.....

क्या आप दयावान हुए? क्या आप संस्कृतियान हुए? क्या आप कृपावान हुए? क्या क्षमा आई? डॉ. राममनोहर लोहिया जी, इतने बड़े व्यक्ति, मैं 16 साल की उम्र में जब उनके साथ रहा, मेरा कायाकल्प हो गया। उन्होंने कहा था— भले ही कीचड़ है, भले ही अन्धेरा है। मैं भाइयों को प्रणाम करने जाऊँगा, मैं रसोई घर में धन्यवाद देने जाऊँगा, जिन्होंने मुझे इतना स्वादिष्ट भोजन कराया, मैं 16 साल का बच्चा नतमस्तक हो गया।

जब मैं भीलवाड़ा रेल्वे स्टेशन पर ब्रज किशोर जी के साथ जा रहा था, 5 किलोमीटर दूर गये। अचानक एक दुर्गन्ध का झोंका आया, सोचा ये दुर्गन्ध कैसी? बहुत दुर्गन्ध आ रही है, रूमाल निकालकर नाक पर रख दिया। देखा एक व्यक्ति तड़प रहा है, उसका पाँव कटा पड़ा है। ऊपर मस्किखर्यौं भीन-भीना रही है, और वह व्यक्ति तड़प रहा है, चिल्ला रहा है। हम तो काँप गये, ब्रज किशोर जी ने कहा— कैलाश जी भाई साहब, आप जल्दी से ऑटो ले आईये, जल्दी से कोई भी गाड़ी ले आईये। ऐसे इंसान को बचाना है, इस मानव को बचाना है। इसके घाव को धोकर मरहम हमें लगानी है। ऑटो वाले ने कहा— मैं नहीं चलाऊँगा। मैंने कहा — आपको चलना पड़ेगा, केवल पैसे के लिये नहीं, इंसानियत को नहीं बचाओगे तो क्या बचाओगे?

उत्साह का आधार निःस्वार्थ प्यार मत्स्यावतार स्टेशन गठरी ... टनाटन

मत्स्यावतार में भगवान ने कहा था — मनु! मैं नाव लेकर आऊँगा, मेरे दो सींग होंगे। तुम रस्सी तैयार रखना, प्रलय काल आने वाला है। सात दिन बाद सब डूब जायेगा, बचाने योग्य बचा लेना। मनु ने धर्म बचाया, मनु ने संस्कृति बचायी, मनु ने दया बचायी, मनु ने क्षमा बचायी। मनु ने मानव धर्म के इतिहास को बचाया। ऑटो वाले को जब मैंने कहा, आप नहीं चलोगे तो हम झगड़ा करेंगे, आपको यहाँ से जाने नहीं देंगे। ऑटो वाला आया, मुँह पर रूमाल रखा और जब हॉस्पिटल ले गये तो डॉक्टर ने कहा — हम इनको भर्ती नहीं करेंगे। ब्रज किशोर जी को मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ। उन्होंने कहा— डॉक्टर साहब ये हॉस्पिटल हमारे टैक्स के पैसे से बना है। आपको इसको भर्ती करना होगा, नहीं तो हम बहुत आंदोलन करेंगे। अभी मैं माईक लेकर पूरे शहर में घूमूंगा, आपकी निंदा हो जायेगी। इसको आप अभी भर्ती कीजिये, आप कौन होते हो मना करने वाले? डॉ. बोले, आपका ये क्या लगता है? उन्होंने कहा — ये तो मेरा छोटा भाई लगता है। ये भी इंसान है, मैं भी इंसान हूँ। वेदों में लिखा है एक पिता की सब सन्तान, परम पिता की सब सन्तान। डॉक्टर को डर लगा, अरे ये तो आंदोलन कर देंगे, ये तो पूरे शहर में बदनामी करवा देंगे, ये तो सरपेंड करवा देंगे। तब डॉ. साहब ने कहा आप इन कागज पर हस्ताक्षर करो। आप 50 कागज पर हस्ताक्षर करालो, आप 100 पर करा दीजिये। लेकिन इसकी मरहम पट्टी कर दीजिये, आप इसके घाव ठीक कर दीजिये। सच्ची सेवा प्रभु पूजा है उत्तम यज्ञ विधान है, दरिद्र नारायण बनकर आता, कृपा सिंधु भगवान है। मत पूछिये तेरी जाति क्या है, मत पूछिये तेरा काम क्या है, मत पूछिये तेरा रूप क्या है? ये पूछ लीजिए कि तेरा घाव कहाँ है? मैं मरहम लगा दूँ, मैं ईलाज कर दूँ, मैं ठीक कर दूँ, मैं आपको पानी पिला दूँ, मैं आपको भोजन करा दूँ, मैं आपकी मरहम पट्टी कर दूँ।

गिरधारी कुमावत जी और मानव जी जब रेल्वे स्टेशन से आगे उदयपुर जा रहे थे, ऐसा ही एक दुर्गन्ध का झोंका और आया देखा एक गठरी में कोई हिल रहा है। अरे! गठरी है, ये गठरी हिल कैसे रही है। वस्तु तो हिलती नहीं, ये हिलेगा क्या? क्रमशः

मुनव्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल अलायक प्रबन्धक-मोहन लाल गाडनी अंपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी अंपादक-अख्योगी-धनश्याम चिंत नरौड

सती अनुसुइया

नारदजी जब लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती के पास पहुंचे और उन्हें अत्रि महामुनि की पत्नी अनुसुइया के असाधारण पतिव्रत्य के बारे में बताया तब इस पर तीनों देवियों के मन में अनुसुइया के प्रति ईर्ष्या का जन्म होने लगा। तीनों देवियों ने सती अनुसुइया के पतिव्रत्य को खंडित करने के लिए अपने पतियों को उसके पास भेजा।

विशेष आग्रह पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने सती अनुसुइया के सतीत्व और ब्रह्म शक्ति की परख करने की सोची। जब अत्रि ऋषि आश्रम से कही बाहर गए थे। तब ब्रह्मा, विष्णु और महेश यतियों का भेष धारण करके अत्रि ऋषि के आश्रम में पहुंचे और भिक्षा मांगने लगे।

अतिथि-सत्कार की परंपरा के चलते सती अनुसुइया ने त्रिमूर्तियों का उचित रूप से स्वागत करके उन्हें खाने के लिए निमंत्रित किया। लेकिन यतियों के भेष में त्रिमूर्तियों ने एक स्वर में कहा, 'हे साध्वी, हमारा एक नियम है कि जब तुम नग्न होकर भोजन परोसोगी, तभी हम भोजन करेंगे। 'अनुसुइया' 'जैसी आपकी इच्छा' यह कहते हुए यतियों पर जल छिड़क कर तीनों को तीन प्यारे शिशुओं के रूप में बदल दिया। तब अनुसुइया के हृदय में मातृत्व भाव उमड़ पड़ा। फिर शिशुओं को दूध-भात खिलाया और तीनों को गोद में सुलाया तो तीनों गहरी नींद में सो गए।

अनुसुइया माता ने तीनों को झूले में सुला कर कहा— 'तीनों लोकों पर शासन करने वाले त्रिमूर्ति मेरे शिशु बन गए, मेरे भाग्य को क्या कहा जाए। फिर वह मधुर कंठ से लोरी गाने लगी।

उसी समय कहीं से एक सफेद बैल आश्रम में पहुंचा, एक विशाल गरुड़ पंख फड़फड़ाते हुए आश्रम पर उड़ने लगा और एक राजहंस कमल को चोंच में लिए हुए आया और आकर द्वार पर उतर गया। यह नजारा देखकर नारद, लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती आ पहुंचे।

नारद ने विनयपूर्वक अनुसुइया से कहा, 'माते, अपने पतियों से संबंधित प्राणियों को आपके द्वार पर देखकर ये तीनों देवियां यहां पर आ गई हैं। ये अपने पतियों को ढूँढ रही थी। इनके पतियों को कृपया इन्हें सौंप दीजिए।'

अनुसुइया ने तीनों देवियों को प्रणाम करके कहा, 'माताओं, झूलों में सोने वाले शिशु अगर आपके पति हैं तो इनको आप ले जा सकती हैं, लेकिन जब तीनों देवियों ने तीनों शिशुओं को देखा तो एक समान लगने वाले वे तीनों शिशु गहरी निद्रा में सो रहे थे। इस पर लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती भ्रमित होने लगीं।

नारद ने उनकी स्थिति जानकर उनसे पूछा— 'आप क्या अपने पति को पहचान नहीं सकतीं?' कृपया आप हास्य का पात्र न बनें और जल्दी से अपने-अपने पति को गोद में उठा लीजिए।'

देवियों ने जल्दी में एक-एक शिशु को उठा लिया। वे शिशु एक साथ त्रिमूर्तियों के रूप में खड़े हो गए। तब उन्हें मालूम हुआ कि सरस्वती ने शिवजी को, लक्ष्मी ने ब्रह्मा को और पार्वती ने विष्णु को उठा लिया है। तीनों देवियां शर्मिंदा होकर दूर जा खड़ी हो गईं।

उसी समय अत्रि महर्षि अपने घर लौट आए। अपने घर त्रिमूर्तियों को पाकर हाथ जोड़ने लगे। तभी ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ने एक होकर दत्तात्रेय रूप धारण किया। उक्त कथा को दत्तात्रेय के जन्म से जोड़कर भी देखा जाता है।



गायत्री की 24 सिद्धियाँ कौन सी है?

गायत्री को सर्व विघ्न विनाशिनी, सर्व सिद्धि प्रदायनी कहा गया है। संकटों का संवरण और सौभाग्य संवर्धन के लिए उनका आश्रय लेना सदा सुखद परिणाम ही उत्पन्न करता है। तो भी विशेष प्रयोजनों के लिए उनके 24 अक्षरों में पृथक-पृथक प्रकार की विशेषताएँ भरी हैं। किसी विशेष प्रयोजन की सामयिक आवश्यकता पूरी करने के लिए उनकी विशेष शक्ति धारा का भी आश्रय लिया जा सकता है। चौबीस अक्षरों की अपनी विशेषताएँ और प्रतिक्रियाएँ हैं—जिन्हें सिद्धियाँ भी कहा जा सकता है जो इस प्रकार बताई गई हैं —1.आरोग्य 2.आयुष 3.तुष्टि 4.पुष्टि 5.शान्ति 6.वैभव 7.ऐश्वर्य 8.कीर्ति 9.अनुग्रह 10.श्रेय 11.सौभाग्य 12.ओजस् 13.तेजस् 14.गृहलक्ष्मी 15.सुसंतति 16.विजय 17.विद्या 18.बुद्धि 19.प्रतिभा 20.ऋद्धि 21.सिद्धि 22.संगति 23.स्वर्ग 24.मुक्ति।



प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से लाभ

— प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से शरीर स्वस्थ रहता है।
— प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से शरीर की वृद्धि होती है।
— प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से तन-मन प्रसन्न होता है।
— प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से बुद्धि का विकास होता है।
— प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से परस्पर सबका सुख बढ़ता है।
— प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से परस्पर निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।
— प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से सभी लोग उसे चाहते हैं, प्रेम करते हैं और उससे संबंध रखना चाहते हैं।

सत्संग
चैनल पर सीधा प्रसारण

सादर आमंत्रण

दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायतार्थ

भजनसत्संग एवं मानव मन के बोल

दिनांक 28 से 30 मार्च 2016

समय :
सांय : 07.00 से रात्रि : 10.30 बजे तक
स्थान
सेवामहातीर्थ लियो का गुड़ा, बड़ी, उदयपुर (राज.)

कथा व्यास परम पुज्य कैलाश जी 'मानव'
व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान कराएंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर ' भजनसत्संग एवं मानव मन के बोल' का श्रवण लाभ उठावें।
संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999
:: 'निःशक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

| | | | |
|--|--|---|--|
| कैलाश "मानव" चैयरेन संस्थापक नारायण सेवा संस्थान | कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान | प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान | वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान |
| जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान | देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान | | |

**भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी...
कृपया सपरिवार अवश्य पधारें।**